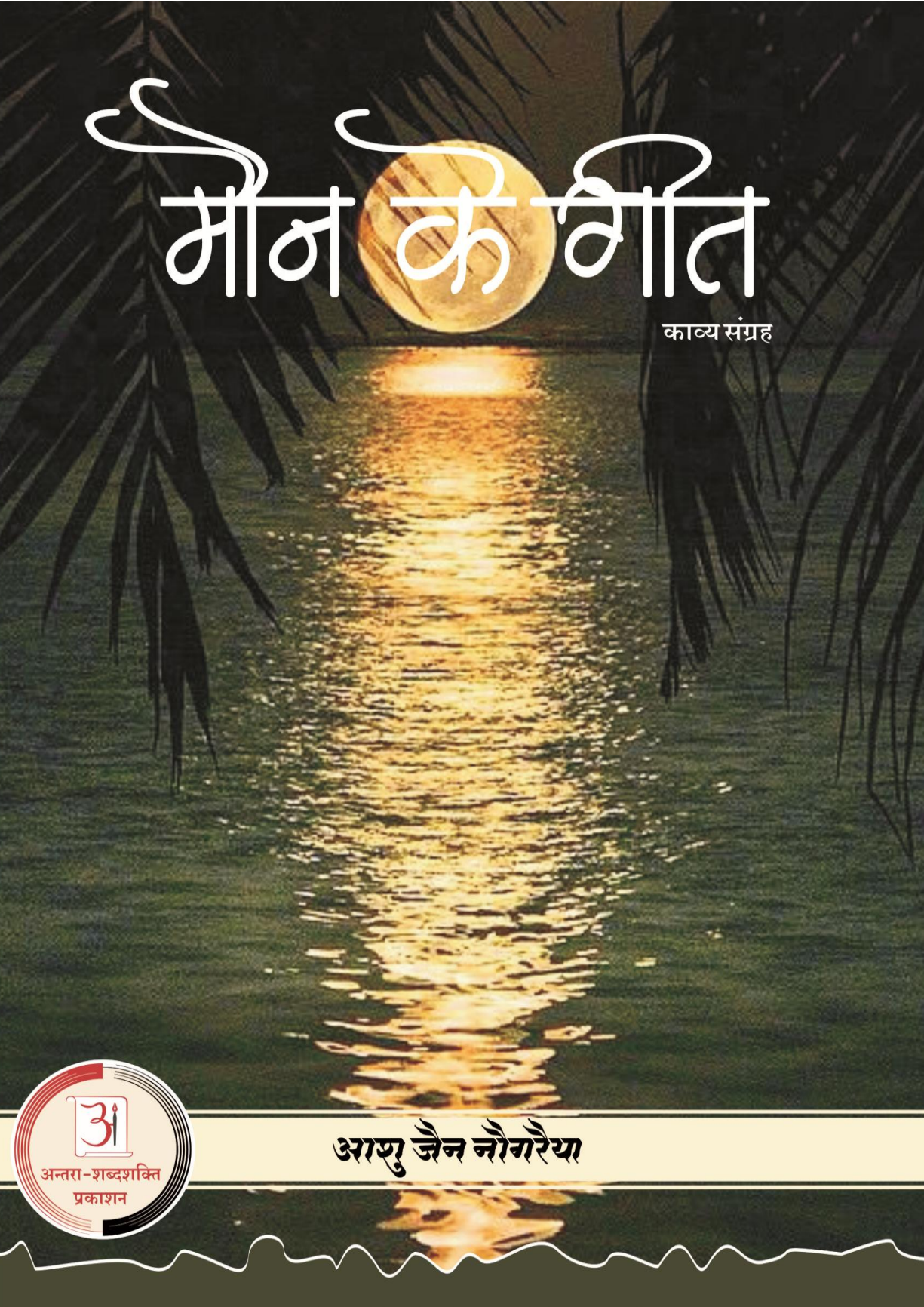
मौन के गीत
काव्य संग्रह
आशु जैन नौगरैया
अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

मौन के गीत

गीत संग्रह

डॉ. आशु जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-066-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **डॉ. आशु जैन**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

MOUN KE GEET BY ASHU JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

प्रस्तुत काव्य संग्रह ''मौन के गीत'' मौलिक रचनाओं का एक ऐसा मिश्रण है जिसमे हृदय की गहराइयो से निकली गूँज पाठको को स्वतः आकर्षित करती है. इस पुस्तक को पढ़ते हुए पाठक स्वयं को जुड़ता हुआ अनुभव करता है और ऐसा लगता है मानो सभी गीत उसके अपने हैं. यह पुस्तक उन कल्पनाओं को समाहित करती है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक अटूट हिस्सा हैं लेकिन व्यक्त करने में असमर्थता महसूस होती है. ईश्वर की असीम कृपा, मेरी माँ श्रीमती उषा जैन एवं मेरी सासू माँ श्रीमती माया नौगरैया के असीमित आशीर्वाद से यह पुस्तक अपना मूर्त रूप ले सकी है. मेरे सुख दुःख के साथी मेरे हमदम श्री अमित नौगरैया का मुझ पर अटूट विश्वास मुझे उनसे अत्यधिक प्रेम करने को मजबूर कर देता है. मेरी बुआ सास श्रीमती किरण मोर जी के सहयोग के बिना यह कार्य असंभव दिखाई देता था अतः उनका ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ. इन सबके अतिरिक्त मैं आदरणीय प्रीति सुराना जी एवं अंतरा शब्दशक्ति परिवार का धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने मुझ जैसी नवोदित रचनाकार को इतना बड़ा मंच प्रदान किया जिसके माध्यम से मैं अपने हृदय की आवाज को आप सभी पाठकों तक पहुंचा सकी हूँ.

पूज्यनीय माँ के चरणों में सादर समर्पित.

डॉ. आशु जैन

अनुक्रमणिका

1.	शरद का चाँद	7
2.	भवानी	8
3.	शिव	9
4.	गजानन	10
5.	दर्पण	11-12
6.	श्रृंगार	13
7.	मीत	14
8.	आखिर क्यों ?	15
9.	बारिश और तुम	16
10.	गलतफहमी	17
11.	स्वप्न सलोना	18
12.	तारीफ	19
13.	तेरी याद	20
14.	बहाने	21
15.	पिता	22
16.	वचन	23

17.	**हल**	24
18.	**कानून**	25
19.	**मी टू**	26-27
20.	**किरदार बदल लें**	28
21.	**आराम**	29
22.	**बेटी है**	30
23.	**मुझे जाने दो**	31
24.	**ऐसा क्यों है?**	32

शरद का चाँद

धन्य हो गई धरा, धन्य हुआ आसमान
और धन्य हो गया, शरद पूर्णिमा का चाँद
धन्य हुआ कण-कण, धन्य हुआ प्रतिक्षण
धन्य हुआ मानव और, धन्य हुआ ये जहान
शरद पूर्णिमा का चाँद, खुद पे है लजा गया
उस से भी मधुर एक, चाँद नीचे आ गया
आज है वाही दिवस, जब देवता आये उतर
जन्म हुआ गुरुवर का श्रीमती मलप्पा के घर
रात्रि में भी चन्द्रमा, दिवस में भी चन्द्रमा
प्रकृति भी हो गई थी, बहुत सुन्दर अनुपमा
ऐसा लग रहा था मानों एक चाँद कम था
तभी तो आचार्य श्री का, हुआ भव्य जन्म था.
कलयुग में सतयुगी, जीव कोई आया है,
महावीर के संदेशे ऊपर से लाया है.
धर्म को मिली दिशा, अहिंसा का बढ़ा मान,
गुरु विद्यासागर का ध्येय है जनकल्याण.
गुरुवर के चरणों में नतमस्तक धरा है
और आसमान से, भी अमृत झरा है.
आज का ये दिन पवन, धन्य है शरद ऋतु
गुरुदेव के चरणों में, बारम्बार नमोस्तु.

भवानी

मन में विराजो आज भवानी
सुन लो सारे राज भवानी
अमन चौन छा जाये जग में
बजे सुखों के साज भवानी
देश तरक्की करता जाये
ऐसी दो परवाज भवानी
जो चाहे सबका सुख पहले
वाही बने सरताज भवानी
जैसे राम बने थे राजा
वैसा हो महाराज भवानी
कलयुग में सतयुग आ जाए
बीता कल हो आज भवानी
यही प्रार्थना तुमसे मैय्या
पूरी कर दो आज भवानी
मन में विराजो आज भवानी
सुन लो सारे राज भवानी.

शिव

धधक रही है ज्वाला अंदर
खुद को कैसे समझाऊँ मैं
या तो शिव नीचे आ जाए
या शिव ही हो जाऊँ मैं ।
बढ़ता जाए अत्याचार
देखूँ बेबस हो लाचार
कैसे उन बदमाशों का
संहार करूँ शांति पाऊँ मैं
या तो शिव नीचे आ जाए
या शिव ही हो जाऊँ मैं ।
चारों ओर है हाहाकर
नन्ही कलियाँ करें पुकार
कैसे उन छोटी कलियों का
दामन आज बचाऊँ मैं
या तो शिव नीचे आ जाए
या शिव ही हो जाऊँ मैं ।
क्रोध से मेरे नेत्र जले
जहर पिलाने हाथ बढ़े
लगता है अब तांडव करके
धरती पूरी हिलाऊँ मैं
या तो शिव नीचे आ जाए
या शिव ही हो जाऊँ मैं ।

गजानन

हे गजानन, हे लंबोदर
सुनो न
एक बात कहनी है
क्यों प्रकृति इतनी सूनी है
क्यों तुम्हारी तरह ऊर्जावान नही है
क्यों अब मात पिता का वो सम्मान नही है
बताओ न विघ्नहर्ता,
क्यों गलियाँ सूनी पड़ी हैं,
सूनी गलियों में सिसकियां खड़ी हैं,
एक प्रश्न है मेरा हे गणपति,
क्यों समाज मे चहुँ ओर फैली विकृति
दुनिया में फैला पापाचार,
मिटाने आओ और लो अवतार,
हे गौरी पुत्र गणेश,
तुम तो सब जानते हो,
पापियो को पहचानते हो,
उन्हें उनकी करनी का फल दो,
सब्र नही होता अब
आओगे तुम कब,
आंखे बंद है दिल उदास है
मेरे नैनो को गजानन तेरे दरश की प्यास है।

दर्पण

सोचा आज खुद से खुद की मुलाकात करूँ
अकेली बैठी हूँ दर्पण से ही थोड़ी बात करूँ।
पूछा मैने उससे बड़े ही सम्मान से
बताओ कैसी लग रही हूँ, थोड़े अभिमान से
थोड़ा सकुचाते हुए बोला मुझसे दर्पण
लग रही हो सुंदर पर कल से थोड़ी सी कम,
आश्चर्य से मैने पूछा, एक दिन में क्या घटा!
बोला एक-एक करके एक पूरा दिन घटा।
मैं भी कुछ देर के लिए सोच में पड़ गई
बात तो सीधी कही सीधे दिल में उतर गई
हर पल हर क्षण ढल रहा है इंसान
फिर किस बात का है इतना अभिमान?
क्यों है बेवजह बैर, लड़ाई और नफरत
क्यों दूसरों को छलने हो रही दिमागी कसरत?
क्यों लगे हुए हैं हम खुद को बनाने में महान?
क्यों नहीं समझता कि हर पल ढल रहा है इंसान?
दर्पण के सामने बैठकर खुद से एक वादा किया

बहुत जिया खुद के लिए अब मदद का इरादा किया
नही शामिल होना अब किसी भी होड़ में
दूसरों को नीचा दिखाने वाली किसी भी दौड़ में।
अब अपने हर पल का सही इस्तेमाल करना है
खुद को प्यार करना है दूसरों की सँभाल करना है
दिल से मिटाने है हर दर्द जो सबने दिए
माँगनी है क्षमा जो मेरे कारण कभी रो दिए
हर पल मुस्कुराने की आदत डाल लूँगी
जो कहे कोई बुरा मुझे तो हँसकर टाल दूँगी।
उठते-उठते मैंने एक बार फिर दर्पण को देखा
उसकी आंखों में थी सम्मान की एक रेखा
आँखों में अपनी चमक को संभाले हुए
निकल पड़ी पूरे करने खुद से जो वादे किये।

श्रृंगार

तू मेरा श्रृंगार है प्रियतम तू ही मेरा गहना है
मन ही मन में सोच रही हूँ कबसे तुझसे कहना है
तुझसे मेरी भोर सजनवा तुझसे मेरी रैना है
तू चाहे या न चाहे पर तेरे दिल में रहना है।
तू मेरी चूड़ी है साजन तू ही बिंदिया है मेरी
तू ही मेरा स्वप्न सलोना तू ही निंदिया है मेरी
अब तो तेरी कसम उठाकर मुझको इतना कहना है
तू चाहे या न चाहे पर तेरे दिल में रहना है।
रूप तुम्हारा श्याम सलोना जैसे आंखों का काजल
मन्द मधुर आवाज तुम्हारी जैसे बजती है पायल
अब न दिन में होश है मुझको न रातों में चौना है
तू चाहे या न चाहे पर तेरे दिल में रहना है।
तू मेरा आभूषण है, तुझको मैंने पहन लिया
दुनिया ने था बहुत सताया मैने सबकुछ सहन किया
अब जिसको जो करना कर ले मुझको तेरी होना है
तू चाहे या न चाहे पर तेरे दिल में रहना है।

मीत

वो मीत मेरा मनमीत मेरा
जीवन का वो हर गीत मेरा
मेरे अंधियारे हर पल में
आशाओं का वो दीप मेरा।
जब–जब तन्हाई ने घेरा
वो बनता है संगीत मेरा,
जब प्यार की नदियाँ सूखी हो
वो देता सुख का नीर झरा,
जब पतझड़ का मौसम आये
वो करता दिल को हरा भरा,
जब सूनी रातें डसती हैं,
वो चाँदनी देता है बिखरा
जब उम्मीदें सारी टूटी हों
वो भर देता उत्साह नया
वो मीत मेरा मनमीत मेरा
जीवन का वो हर गीत मेरा।

आखिर क्यों ?

क्यों तुमको अब पहले सा प्यार नहीं?
क्यों चाँद में अब मेरा दीदार नहीं?
क्यों दो नैना मिलकर होते चार नही?
सुनो ! तुम्हारा नयापन मुझे स्वीकार नहीं।
क्यों मेरे बिन दिन और रात बेकार नहीं?
क्यों मेरे संग भी आता तुम्हे करार नहीं?
क्यों आँखे अब करती दिल पर वार नहीं?
सुनो ! तुम्हारा नयापन मुझे स्वीकार नहीं।
क्यों मुझपर पहले सा वो एतबार नहीं?
क्यों मेरे रंग रूप का वो सत्कार नहीं?
क्यों मेरी बातों का चढ़े खुमार नहीं?
सुनो ! तुम्हारा नयापन मुझे स्वीकार नहीं।

बारिश और तुम

आज बारिश में भीगने का मजा आ गया
आंखों में आंसुओं का जलजला आ गया
जी भर के भीगे, जी भर के रोये
बेजार रोने का मजा आ गया।
भरी बरसात और तेरी याद, वाह!!
दोनों के साथ होने का मजा आ गया।
तेरी यादें अक्सर आंखे नम किया करतीं थीं
तेरी यादों को भिगोने का मजा आ गया।
हर पल रोया है दिल, तुझे खोने के बाद
आज यादों में खोने का मजा आ गया।
मैं तुझे ढूँढा करती थी बाहर हर जगह
आज खुद में तेरे होने का मजा आ गया।
पहले तेरी बातें इधर उधर की लगती थीं
आज बातों की कड़ियाँ पिरोने का मजा आ गया।
अब तलक अकेली थी मैं तन्हाइयों से घिरी
सुनसान सड़कों पे तेरे साथ होने का मजा आ गया
जिस्म तो बने ही हैं जुदा होने के लिए
रूह से रूह के साथ होने का मजा आ गया।

गलतफहमी

गलतफहमियों से अट गए रिश्ते
उधड़े, टूटे, फट गए रिश्ते,
सब चलते थे साथ साथ पर
जाने कैसे कट गए रिश्ते?
भाई भाई का दुश्मन हो गया
गाजर घास से पट गए रिश्ते
भ्रम की चारों ओर दीवारें
दीवारों में ही घुट गए रिश्ते।
क्या सगा क्या सौतेला था
खून-खून के लुट गए रिश्ते।
कभी जुदा न हो सकते थे
वे भी देखो मिट गए रिश्ते।
पी कर भ्रम का घोर हलाहल
घिसट घिसट कर मरते रिश्ते
सांस उन्हें अब ले लेने दो
सिमट सिमट कर तरसे रिश्ते।
मत बनने दो बोझ उन्हें
हैं प्यारे प्यारे हल्के रिश्ते
तोड़ो भ्रम की ये दीवारें
खिलखिला दे फिर से रिश्ते।

११. स्वप्न सलोना

तेरे-मेरे का फर्क मिटाकर
हम सब हो गए एक
बुरे काज सब छोड़-छाड़ कर
काम कर रहे नेक
धर्म अनेकों फैले पर
सब राह दिखाते एक
लाख हमारे उपरवाले,
ईसा राम सब एक।
ऐसा सुंदर स्वप्न सलोना
आया था कल रात
आंख खुली तो पता चला
बस सपने की थी बात।
कल से बस मैं सोच रही,
ये सपना सच हो जाए
राम रहीम तो एक ही हैं,
हिन्दू मुस्लिम मिल जाएं।
ईश्वर ने न बाँटा हमको,
हम खुद ही बँट केगए
गैरों ने न लूटा हमको,
हम अपनों से लुट गए।
आओ मिलकर हम सब
मेरा ये सपना सच कर दें
तेरे-मेरे का भेद मिटाकर
दिल में एक ही रंग भर दें।
न कोई मुस्लिम, न कोई हिन्दू
न कोई मैं- मैं, न कोई तू -तू
एक ही वेश, एक ही परिवेश
दुनिया में सुंदरतम होगा
हमारा भारत देश।।।

तारीफ

पाकर प्रशंसा अपनी फूले हैं हम
खुद के सामने सबको भूले हैं हम
हर दिन नया एक वहम पाल लेते हैं
खुद की तारीफ करके अहं को संभाल लेते हैं।
जो कोई न करे तारीफें हमारी
खतरे में पड़ जाती है उसके संग यारी
पुराने किस्सों से वाह वाही खंगाल लेते हैं
खुद की तारीफ करके अहं को संभाल लेते हैं।
गर कोई भूल जाए नाम लेना हमारा
हमने फिर उसका हर काज बिगाड़ा
उसके कामों में अपना नाम निकाल लेते हैं
खुद की तारीफ करके अहं को संभाल लेते हैं।
दो कंधों पे दुनिया की जिम्मेदारी उठाई
जो ये न कहे उसकी शामत है आई
उसके मुख से ये बात निकाल लेते हैं
खुद की तारीफ करके अहं को संभाल लेते हैं।
जिस दिन फूटेगा अहम का ये गुबार
उस दिन उतरेगा वहम का ये खुमार
चल रहे हो जो अब तक आंखों को मीचे
पाओगे खुद को नीचे बहुत नीचे
मत भागो पीछे तारीफों के सम्मान के
मत बढाओ अहंकार को पद के और नाम के
दो पल की खुशी जीवन भर का नुकसान
तारीफ के चक्कर में बर्बाद होता इंसान।

तेरी याद

दूर कहीं दिल के कोने में
याद तेरी कुछ बाकी है
मैखाने में बैठा हूँ और
जाम ही मेरा साकी है।
तुझसे मिलने की ख्वाहिश है
रोज दुआएं, सदको में
तेरा आना है नामुमकिन
इन्तजार पर बाकी है।
अंधेरों में छोड़ गया तू
बीच कहीं दरियाओं में
आ जाए अब काश उजाला
दूर किनारा बाकी है।
मेरी आंखे तेरे सपने
आज भी देखा करती हैं
रूह तो कबकी निकल चुकी
बस जान कहीं कुछ बाकी है।

बहाने

माँ तुम क्यों रोज नए बहाने बनाती हो
क्यों मुझे नए कपड़े नही सिलवाती हो
तुम क्यों रोज बीमार पड़ जाती हो
मेरे लिए खाना भी अच्छा नहीं बनाती हो
माँ मेरे सब दोस्तों के पास किताबें हैं
तुम मुझे नई किताबे क्यों नहीं दिलवाती हो
जब भी मैं कहती हूँ मुझे मीठा खाना है
तुम थोड़ी सी शक्कर क्यों चटाती हो?
कहते हैं परियो के पास सब कुछ होता है
फिर तुम मुझे परी कहकर क्यों बुलाती हो
रोज कहती हो पापा आज आयेंगे
तुम मुझे पापा से क्यों नहीं मिलवाती हो?
देखो मेरी गुड़िया का हाथ कबसे टूट गया है
तुम नए खिलौने क्यों नहीं दिलवाती हो?
माँ तुम क्यों रोज नए बहाने बनाती हो????

पिता

माँ अगर होती है सब कुछ
तो पिता भी कुछ जरूर होता है,
लेकिन कहता नहीं कुछ कभी
यही उसका सबसे बड़ा कुसूर होता है।
अगर जागती है माँ रात-रात भर
तो पिता भी कहाँ चैन की नींद सोता है,
अगर टूटती है माँ बच्चे के दुख में
तो पिता भी अकेले में चुपके से रोता है।
अगर चाहती है माँ बच्चे का सुनहरा भविष्य
तो पिता भी मन ही मन सुस्वप्न संजोता है,
अगर माँगती है दुआयें माँ सलामती की
तो पिता भी दुआओं में बेचौन सा होता है।
माँ अगर होती है किशमिश की तरह
तो पिता सख्त कच्चा नारियल सा होता है,
माँ अगर देती है तकलीफों में साथ
तो पिता उनमें सबसे बड़ा सहारा होता है।
धन्य हैं वो जिन्हें मिलता है माँ के साथ पिता का प्यार
क्योंकि हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं होता है।

वचन

रोती, बिलखती, दशरथ की अँखियाँ,
पूछ रही हैं कैकेयी से अनेकों सवाल,
जिसने कदम नही रखा जमी पे,
जंगलों में भटका है क्यों मेरा लाल?
देवी सी, नाजुक सी, कोमल वो नार,
कैसे सहेगी जंगल और भयावह पहाड़?
छोटा सा, नटखट, वो भाई का प्यारा,
कैसे बनेगा अपने अग्रज का सहारा?
मेरी थी भूल जो दिया तुझे वचन,
मेरे सपूत भटक रहे हैं वन वन
सूनी अयोध्या है सूना है घर द्वार
सूना-सूना लागे है मुझे सारा संसार
कर जोड़ूँ कैकेयी विनती करूँ तेरी
दे दे मुझे प्राणों से प्यारी संताने मेरी।
बुला उन्हें वापस और न जाने की ले कसम
उनके बिना निकल रहे हैं प्राण मेरे हर दम।
भूल रहे है राजा जी रघुकुल की रीत
मोहपाश में घेरे है उन्हें राम की प्रीत।
वचन लिया है राम ने तो पूरा निभाएंगे
प्राण से चाहे चले जाएं पर वचन से नही जाएंगे।

हल

चलो अपनी परेशानियों का हल खोजते हैं,
जिन्दगी के प्रश्न कुछ सरल खोजते हैं।
कल कल की भागदौड़ बन गई है जिन्दगी
जीने के लिए वर्तमान का ये पल खोजते हैं।
जवानी बीत गई दिखावे के मकानों में
सुकून मिले जहाँ वो सुख का महल खोजते हैं।
नफरत के पौधों से पट गई है धरती सारी
प्यार पनपे जिनसे ऐसे बीजों की फसल खोजते हैं।
शहरों के नलो से प्यास नही बुझती लोगों की
जिनसे चौन मिले ऐसी गांव की रहल खोजते है।
हर घर में गूंजे खुशियों की किलकारी
आओ बिटियों की ऐसी चहल खोजते हैं।
भीड़ बनने को तो हर युवा है तैयार
जो कमान संभाले ऐसी पहल खोजते हैं।

कानून

एक दिन मैने कानून को
कटघरे में खड़ा पाया
हाथों में लाठी थी
और थी जर्जर काया
अपनी हालत और हालात पर
बहुत था वो पछताया
उसकी अवस्था देख के
मुझे भी रोना आया।
बहुत था लाचार और
बेतहाशा था दुखी
उसके होते हुए भी नही थी
देश की बेटी सुखी
काँप रहा था कानून,
रो रहा था विधान
पूछ रहा था कैसे बचाये ,
बेटियों का सम्मान
उसके मन में उठ रहा था
प्रश्नों का तूफान
सबसे पहला प्रश्न था,
कैसे बनाये इंसान को इंसान?
बन गया था मखौल वो
और नेताओं का खिलौना
उसकी आँखों में थी पट्टी,
और किस्मत में सोना
देख कर भी सबकुछ वो
चुपचाप पड़ा था
अंतिम सांसे गिनता,
वो मौत से लड़ा था
बोला, बेटा ! आजाद तो हो गये तुम
लेकिन मैं पराधीन हो गया
अपनों से ही हारकर
मैं उनके अधीन हो गया
अब तुमसे है उम्मीद,
आजादी का दिया जलाओगे
खुद को तो आजाद कर लिया,
मुझे भी बेड़ियो से मुक्त कराओगे।

मी टू

हाँ आज कहती हूँ मैं, नहीं कहा जो अब तक
सहती आयी जो अब तक,
अब नहीं सहूँगी मैं, चुप नहीं रहूँगी मैं
देख लिया रिश्तों को, इतने करीब से
कि आती है घिन मुझे, अपने नसीब से
अपने मन की दीवारों पे, जो राज छिपाए थे मैंने
माँ तुमसे भी छिपकर, आँसू बहाए थे मैंने
अब बताऊँगी खुलके सबको, जख्म दिखेंगे मनके सबको
जब छोटी सी बच्ची थी मैं, दिल की एकदम सच्ची थी मैं
नहीं मालूम था गुड टच बैड टच,
क़सम से झूठ नहीं मैं कह रही हूँ सच
हो भले वो बुजुर्ग या रिश्ते के भाई
मेरी अस्मिता पे तो जैसे शामत थी आयी
पहले लगा रिश्ते शायद ऐसे ही होते है
देर से अकल आयी कि ये तो बस धोखे है
धीरे धीरे बड़ी हुई अपने पैरों पर खड़ी हुई
यौवन ने दस्तक दी थी किसी से मुझे मोहब्बत हुई थी

नया नया प्यार था भरोसा बेशुमार था
एक दिन भरोसा टूट गया, मेरा प्यार मुझे ही लूट गया
प्यार तो मैंने किया था उसने तो मुझे सिर्फ छला था
अब जाके समझ में आया कौन बुरा कौन भला था
पश्चात्ताप में जलती रही, मन ही मन मैं घुलती रही
थोड़ी थोड़ी दिन-रात और सुबह शाम मैं पिघलती रही
अगर यूँ ही घुलती रही तो एक दिन ख़त्म हो जाऊँगी
किसी को क्या मेरी फिक्र है जो याद किसी को रह पाऊँगी
लगता था दुनिया की मैं ही एक अभागन हूँ
रिश्तों ने था जिसे डसा मैं एक ऐसी नागिन हूँ
जब जाना मी टू के बारे में तब ये बात पता चली
इससे नहीं अछूती थी किसी भी शहर की कोई भी गली
पहले लगता था कि मैं हूँ तनहा यहाँ खड़ी
अब जाना लाखों मुझ जैसी कोई छोटी कोई बड़ी
डर लगता था कैसे अपने मन की बात बताऊँ मैं
नहीं गलत हूँ मैं बेबस हूँ कैसे सबको समझाऊँ मैं?
भला हो मी टू वालों का जिनने दिल से दर्द निकाल दिया
अब मैंने भी दिल हल्का कर अपना बोझ उतार दिया.

किरदार बदल लें

चलो
आज कुछ
नया करते है
बदल लेते है
किरदार आपस में
तुम मैं बन जाओ
मैं बन जाऊं तुम
हो जाते हैं
गहराई में
एक दूजे
में गुम।
शिकवे सारे
शिकायतें सारी
समां जाने दो
मौन में
छिप जाने दो
आंसू
कही हृदय के
किसी कोने में

चलो न
आज मैं सुनूँ
तुम कहो न
क्यों नहीं इस
नयेपन की गहराई में
समां जाएं
एक दूजे की
तन्हाई में इस कदर
कि रहे न
किसी को
किसी की
फिकर
पा लें
अपने हिस्से का
विश्राम
इस नयेपन की
अनुभूति में
छिपे हैं ढेरों
ईनाम।

आराम

दिनभर की थकन के बाद जब मिलता है तेरी बाहों का घेरा
सच कहती हूँ प्रिय वहीं होता है पूरा आराम मेरा
सारा दिन निकलता है सुबह से शाम होती है
कि मेरी जिंदगी रोज थोड़ी तमाम होती है
न फुर्सत मुझको मिलती है न दिल पे जोर चलता है
बड़ी मुश्किल से साथ तेरे यही एक लम्हा मिलता है
थकन तो टूटने की हद को भी अब पार कर जाए
तेरे आने से टूटन भी जरा कुछ कम सी हो जाये
तू आये तो मेरे दिल को भी अब चौन आ जाये
मेरी टूटती हर एक सांस भी आराम पा जाए
कि साँसों का सिलसिला भी खत्म बस होने वाला है
मेरे पीछे नही कोई जहाँ में रोने वाला है
कि हर उस आंख का आँसू आंख में भर नही पाए
तेरे आने से दिल मेरा जरा आराम पा जाए
तू आये तो चौन से मर सकूँगी सुन मेरे हमदम
तेरे आगोश में ही मुझे आखिरी सांस आ जाये।

बेटी है

अधूरी ख्वाहिश पर, अंधेरे कोने में
चुपके से आंसू, बहा लेती है
बेटी है, सारे रिश्ते निभा लेती है
औरों की गलती पर, चुपचाप हाथ जोड़कर
खुद सबको मना लेती है
बेटी है, सारे रिश्ते निभा लेती है
दिल में हो कितना भी गम
चेहरे पे न दिखे शिकन
होंठो पे झूठी मुस्कान सजा लेती है
बेटी है, सारे रिश्ते निभा लेती है
इच्छाएं रह जाये अधूरी
प्यार की कमी भी न हो पूरी
फिर भी सबपे प्यार लुटा देती है
बेटी है, सारे रिश्ते निभा लेती है

मुझे जाने दो !

उड़ने दो आज मुझे पंख तो फैलाने दो
आजादी का कोई नया गीत मुझे गाने दो
आज पंखों में मुझे परवाज तो लगाने दो
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।
सदियों से जकड़ी हुई बेड़ियाँ हटाने दो
छुपे हुए अरमान आज खुल के बताने दो
अरसा हुआ मुस्कुराये आज मुस्कुराने दो
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।
आसमान तक मुझे उड़ के आज जाने दो
धरती की तरह अपना आँचल लहराने दो
पुरवा के संग मस्त होके बह जाने दो
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।
नदियों की कलकल से सरगम बनाने दो
पतझड़ के पत्तों से साज नए बजाने दो
झरने के संग जरा निर्झर हो जाने दो
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।
हंसने दो और अब न आँसू बहाने दो
तकलीफें आज मुझे सारी भूल जाने दो
खुद के नशे में मुझे खुद ही झूम जाने दो
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।
बंद आँखों से मुझे स्वप्न तो सजाने दो
खुली आँखों से उन्हें पूरे कर जाने दो
अपनी आजादी का मुझे जश्न तो मनाने दो
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।
कसम है न रोको मुझे आज मुझे जाने दो।

ऐसा क्यों है?

मेरे जीवन में तुम्हारे सिवा कुछ भी नही
तुम्हारा जीवन मेरे बिना भी हसीन क्यों है

तुमने ही तो आगे बढ़कर हाथ थामा था मेरा
फिर मेरे बिना भी तुम्हारी महफिल रंगीन क्यों है

इश्क तुमने भी किया मैने भी किया
फिर मेरे ही प्यार की ये तौहीन क्यों है

चले तो दोनों थे आसमान छूने के लिए
फिर मेरे हिस्से में बंजर जमीन क्यों है

दिल टूटा है मेरा तो चोट तुम्हे भी लगी होगी
फिर मेरे ही दिल का माहौल गमगीन क्यों है

आंखों से आंसू तो तुम्हारे भी बहे ए 'अश्क'
लेकिन मेरी आंखो का पानी नमकीन क्यों है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम – आशु जैन नौगरैया

जन्म – 24/08/1985, जबलपुर

शिक्षा – एम.कॉम., एम.बी.ए.(HR), पी.एच.डी.

डॉ. आशु जैन नौगरैया संत अलॉयसिअस महाविद्यालय जबलपुर में वाणिज्य विभाग की समन्वयक एवं सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने वाणिज्य विषय में अपना शोध कार्य किया है एवं डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। १० वर्षो के शिक्षण अनुभव के अलावा वे बास्केटबाल की राष्ट्रीय स्तर की खिलाडी रह चुकी है तथा मानकुंवर बाई महाविद्यालय द्वारा वर्ष २००८ में सर्वोत्तम खिलाडी का सम्मान प्राप्त किया। शोध कार्यों में रूचि के चलते उनकी समसामयिक विषयों पर ०५ पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं, विभिन्न जर्नल्स में ०६ शोध पत्रों का प्रकाशन, २१ पुस्तकों में शोध पत्रों का प्रकाशन एवं लोकजंग अखबार के अंतरा शब्दशक्ति पृष्ठ पर ६ कविताएं एवं १ लघुकथा का प्रकाशन हो चुका है। उन्होंने अब तक १ लघु शोध प्रबंध (उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित) एवं १ राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन (ICSSR द्वारा प्रायोजित) सफलतापूर्वक किया है।

प्रकाशन – ०५ (सम सामयिक विषयों पर जैसे - जल संसाधन एवं प्रबंधन, पर्यटन उद्योग की संभावनाएं एवं चुनौतियां)

सम्मान – सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी सम्मान २००८.

ई मेल – jainashu676@gmail.com

फोन – ६४७६६४१३४४, ८८१७०४३०१६

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-066-7
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध